पंडित दौलतरामजी कृत छहढाला

मंगलाचरण

(सोरठा)

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुं त्रियोग सम्हारिकैं।।

पहली ढाल

संसार के दुखों का वर्णन
(चौपाई)

जे त्रिभुवन में जीव अनंत, सुख चाहैं दुःख तैं भयवंत।
तातैं दुखहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणा धार ।।1।।

ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहौ अपनो कल्याण।
मोह महामद पियौ अनादि, भूल आपको भरमत वादि।।2।।

तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूं कही मुनि यथा।
काल अनन्त निगोद मंझार, बीत्यो एकेंद्रिय तन धार।।3।।

एक श्वास में अठ-दस बार, जन्म्यौ मर्‌यौ भर्‌यौ दुखभार।
निकसि भूमि जल पावक भयौ, पवन आत्येक वनस्पति थयौ।।4।।

दुर्लभ लहि ज्यौं चिंतामणि, त्यौं पर्याय लही त्रसतणी।
लट-पिपील अलि आदि शरीर, धर-धर मर्‌यौ सही बहु पीर।।5।।

कबहुं पंचेंद्रिय शु भयौ, मन बिन निपट अज्ञानी थयौ।
सिंहादिक सैनी है क्रूर, निबल पशु हति खाए भूर।।6।।

कबहुं आप भयौ बलहीन, सबलनि कहि खायौ अति दीन।
छेदन भेदन भूख-पियास, भार वहन हिम आतप त्रास।।7।।

बध-बंधन आदिक दुख घनै, कोटि जीभ तैं जात न भनैं।
अति संक्लेश भाव तैं मर्‌यौ, घोर श्वभ्रसागर में पर्‌यौ।।।8।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

तहां भूमि परसत दुख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहिं तिसो।
तहां राध-श्रोणित वाहिनी, कृमि कुल कलित देह दाहिनी।।9।।

सेमर तरु दल जुत असिपत्र, असि ज्यौं देह विदारैं तत्र।
मेरु समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।।10।।

तिल-तिल करैं देह के खंड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचंड।
सिंधु-नीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूंद लहाय।।11।।

तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहु सागर लौं सहै, करम-जोग तैं नरगति लहै।।12।।

जननी उदर वस्यौ नव मास, अंग सकुचतैं पाई त्रास।
निकसत जे दुख पाए घोर, तिनको कहत न आवै ओर।।13।।

बालपने में ज्ञान न लह्यौ, तरुण समय तरुणी-रत रह्यौ।
अर्धमृतक सम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो।।14।।

कभी अकाम-निर्जरा करै, भवनत्रनिक में सुरतन धरै।
विषयचाह-दावानल दह्यौ, मरत विलाप करत दुख सह्यौ।।15।।

जो विमानवासी हूं थाय, सम्यगदर्शन बिन दुख पाय।
तहं तैं तय थावर-तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करैं।।16।।

दूसरी ढाल

सांसारिक दुखों के मूल कारण

(पद्धरि छंद)

ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चर्ण वश, भ्रमत भरत दुख जन्म-मर्ण।
तातैं इनको तजिए सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूं बखान।।1।।

जीवादि प्रयोजनभूत तत्व, सरधैं तिन माहिं विपर्यत्व।
चेतन को है उपयोग रूप, बिनमूरत चिन्मूरत अनूप।।2।।

पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इन तैं न्यारी है जीव चाल।
ताको न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान।।3।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

मैं सुखी-दुखी मैं रंक-राव, मेरे धन-गृह गोधन-आभाव।
मेरे सुत-तिय मैं सबल-दीन, बेरूप-सुभग-मूरख-प्रवीन।।4।।

तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रकट ये दुःख दैन, तिन ही को सेवत गिनत चैन।।5।।

शुभ-अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करैं निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लकैं आपको कष्टदान।।6।।

रोकी न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुखदायक अज्ञान जान।।7।।

इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानों मिथ्याचरित।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिए सु तेह।।8।।

जे कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर दर्शनमोह एव।
अंतर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन अम्बर तैं सनेह।।9।।

धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म-जल उपल नाव।
जे राग-द्वेष मल करि मलीन,वनिता गदादिजुत चिन्ह चीन।।10।।

ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भव-भ्रमण छेव।
रागादि भाव हिंसा समेत, दर्वित त्रस थावर मरण खेत।।11।।

जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधैं जीव लहै अशर्म।
याकूं गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।12।।

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त।
कपिलादि-रचित श्रुत को अभ्यास,सो है कुबोध बहु देन त्रास।।13।।

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह, धरि करन विविध-विध देह-दाह।
आतम अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन।।14।।

ते सब मिथ्याचरित्र त्याग, अब आतम के हित पंथ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग,अब दौलत निज आतम सुपाग।।15।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

तीसरी ढाल

निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग तथा सम्यग्दर्शन का स्वरूप एवं महिमा

(नरेंद्र छंद जोगीरासा छंद)

आतम को हित है सुख सो सुख, आकुलता बिन कहिए।
आकुलता शिव माहिं न तातैं, शिव-मग लाग्यौ चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव-मग, सो दुविध विचारो।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।1।।

परद्रव्यन तैं भिन्न आप में, रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो, सम्यक ज्ञान कला है।
आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्ष-मग सुनिए, हेतु नियत को होई ।।2।।

जीव अजीव तत्व अरु आस्नव, बंध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिन को, ज्यों का त्यों सरधानों।
है सोई समकित विवहारी, अब इन रूप बखानों।
तिनको सुन सामान्य-विशेषैं, दृढ़ प्रतीति उर आनो ।।3।।

बहिरातम अन्तर-आतम, परमातम जीव त्रिधा है।
देह-जीव को एक गिनै, बहिरात्म तत्व मुधा है।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी।
द्विविधि संघ बिन शुध-उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी ।।4।।

मध्यम अन्तर आतम हैं जे, देशवती अनगारी।
जघन कहे अविरत समदृष्टि, तीनों शिव-मगचारी।
सकलृ-निकल परमातम द्वैविधि, तिन में घ्घाति निवारी।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी ।।5।।

ज्ञानशरीरी त्रिविधि कर्म-मल, वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगें शर्म अनन्ता।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर आतम हूजै।
परमातम को ध्यान निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै ।।6।।

चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं।
पुद्गल पंच वरन रस, गंध-दो, फरस वसू जाके हैं।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिन-मूर्ति निरूपी ।।7।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

सकल द्रव्य को वास जासमें, सो आकाश पिछानो।
नियत वर्तना निशि-दिन सो, व्यवहारकाल परिमानो।
यो अजीव अब आस्त्रव सुनिए, मन-वच-काय त्रियोगा।
मिथ्या अविरति अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ।।8।।

ये ही आतम को दुः ख कारण, तातैं इनको तजिए।
जीव प्रदेश बंधे सौं सो, बंधन कबहुं नसजिए।
शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिए।
तप-बल तैं विधि-झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिए ।।9।।

सकल कर्म तैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इह विधि जो सरधा तत्वन की, सो समकित व्यवहारी।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट अंगजुत धारो ।।10।।

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो।
अष्ट अंग अरु दोष पचीसौं, तिन संक्षेप हु कहिए।
बिन जाने तैं दोष-गुणन को, कैसे तजिए गहिए ।।11।।

जिन-वच में शेका न धार, वृष भव सुख वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्व-कुतत्व पिछानै।
निज-गुण अरु पर-औगुण ढांके, वा निज धर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृष तैं चिगते, निज-पर को सु दिढ़ावैं ।।12।।

धर्मी सौं गो-बच्छ प्रीति सम, कर निज धर्म दिपावै।
इन गुन तैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खइपावै।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तौ मद ठानै।
मद न रूप को, मद न ज्ञान को, धन-बल को मद भानै ।।13।।

तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।
कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की, नहिं प्रशंस उचरै हैं।
जिन मुनि जिनश्रुत बिन, कुगुरादिक तिन्हैं न नमन करैं हैं ।।14।।

दोष-रहित गुण-सहित सुधी जे, सम्यग्दर्श सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं।
गेही पै गृह में न रचे ज्यों, जल दैं भिन्न कमल हैं।
नगर-नारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल हैं ।।15।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष, वान भवन षंढ़ नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक धारी।
तीन लोक तिहुंकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुखकारी ।।16।।

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान-चरित्रा।
सम्यकता न लहै सो दर्शन, धारौ भव्य पवित्रा।
दौल समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहिं होवै ।।17।।

चौथी ढाल

(सम्यग्ज्ञान व एकदेशचारित्र का स्वरूप, भेद एवं महिमा)

(दोहा)

सम्यकश्रद्धा धारि पुनि सेवहु समयग्ज्ञान।
स्व-पर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान ।।1।।

(रोला)

सम्यक साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ ।
लक्षण श्रद्धा जानि दुहू, में भेद अबाधौ ।
सम्यक कारण जान, ज्ञान कारज है सोई ।
युगपत होते हूं, प्रकाश दीपक तैं होई ।।2।।

तास भेद दो हैं, परोक्ष परतछि तिन माहीं ।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मन तैं उपजाहीं ।
अवधिज्ञान मनपर्जय, दो हैं देश प्रतच्छा ।
द्रव्य क्षेत्र परिमाण लिए, जानैं जिय स्वच्छा ।।3।।

सकल द्रव्य के गुन अनन्त, परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल प्रगट, केवलि भगवन्ता ।
ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण ।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण ।।4।।

कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन माहिं, त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते।
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायौ ।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायौ ।।5।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

तातैं जिनवर कथित, तत्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।
यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवौ जिनवानी।
इह विधि गए न मिलै, सुमणि ज्यों उदधि समानी ।।6।।

धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानौ।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो ।।7।।

जे पूरब शिव गए, जाहिं अरु आगे जेहैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान धनधान बुझावै ।।8।।

पुण्य-पाप फल माहिं, हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई ।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ ।।9।।

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।
त्रसहिंसा को त्याग, वृथा थावर न संघारै।
पर-वधकार कठोर निंघ, नहिं वचन उचारै ।।10।।

जल मृत्तिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता ।
निज वनिता बिनसकल, नारि सौं रहै विरत्ता।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिशि गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखै ।।11।।

ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग हजारा ।
गमनागमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा ।
काहू की धन-हानि, किसी जय-हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश, होय अघ बनज कृषी तैं ।।12।।

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे यश लाधै।
राग-द्वेष करतार कथा, कबहूं न सुनीजै।
और हु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजै ।।13।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

धर उर समता भाव, सदा सामायिक करिए।
परब चतुष्टय माहिं, पाप तज प्रोषध धरिए।
भोग और उपभोग, नियम करि ममत निवारै।
मुनि को भोजन देय, फेर निज करहिं अहारै ।।14।।

बारह व्रत के अतिचार, पन पन न लगावै।
मरण समय संन्यास धारि, तसु दोष नशावै ।
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै।
तहं तैं चय नर जन्म पाय, मुनि है शिव जावै ।।15।।

पांचवीं ढाल

बारह भावना

(चाल)

मुनि सकलव्रती बड़भागी, भव-भोगन तैं वैरागि।
वैराग्य उपावन माई, चिन्तैं अनुप्रेक्षा भाई ।।1।।

इन चिन्तत समसुख जागै, जिमि ज्वलन पवन के लागै।
जब ही जिय आतम जानै, तब ही जिय शिवसुख ठानै ।।2।।

जीवन गृह गो धन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय-भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई ।।3।।

सुर असुर खगाधिप जेते, मृग ज्यों हरि काल दले ते।
मणि मंत्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई ।।4।।

चहुं गति दुख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करे हैं।
सब विधि संसार असारा, यामें सुख नाहिं लगारा ।।5।।

शुभ-अशुभ करम फल जेते, भोगे जिय एक हि तेते।
सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथ केहैं भीरी ।।6।।

जल-पय ज्यों जिय तन मेला, पै भिन्न-भिन्न नहिं भेला।
तो आगट जुदे धन धामा, क्यों है इक मिलि सुत रामा ।।7।।

Visit us at http://www.vishuddhasagar.com
Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

पल रुधिर राध मल थैली, कीकस वसादि तैं मैली।
नव द्वार बहैं घिनकारी, अस देह करे किम यारी ।।8।।

जो योगन की चपलाई, तातैं हैं आस्नव भाई।
आस्नव दुखकार घनेरे, बुधिवंत तिन्हैं निरवेरे ।।9।।

जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके ।।10।।

निज काल पाय विधि झरना, तारों निज काज न सरना।
तप करि जो कर्म खिपावै, सोई शिवसुख दरसावै ।।11।।

किनहू न करौ न धरै को, षट्द्रव्यमयी न हरै को।
सो लोक माहिं बिन समता, दुःख सहै जीव नित भ्रमता ।।12।।

अन्तिम ग्रीवक लौं की हद, पायो अनन्त बिरियां पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ ।।13।।

जो भावमोह तैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
सो धर्म जबै जिय धारै, तब ही सुख अचल निहारै ।।14।।

सो धर्म मुनिन करि धरिए, तिनकी करतूति उचरिए।
ताको सुनिए भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी ।।15।।

छठवीं ढाल

(सकलचरित्र एवं स्वरूपाचरणचारित्र का स्वरूप तथा फल)
(हरिगीतिका)

षट्काय जीव न हनन तैं, सब विधि दरब हिंसा टरी।
रागादि भाव निवार तैं,हिंसा न भावित अवतरी।
जिनके न लेश मृषा न जल, मृण हू बिना दीयौ गहैं।
अठ-दश सहस विधि शील धर, चिद्ब्रह्म में नित रमि रहैं ।।1।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर, संग दशधा तैं टलै।
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्य्या तैं चलैं।
जग सुहितकर सब अहितकर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं।
भ्रम-रोग हर जिनके वचन, मुख-चंद्र तैं अमृत झरैं ।।2।।

छ्यालीस दोष बिना सुकुल, श्रावक तनैं घर अशन को।
लैं तप बढ़ावन हेतु नहिं ध्तन, पोषते तजि रसन को।
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखि कैं गहैं लखि कैं धरैं।
निर्जन्तु थान विलोकि तन, मल-मूत्र-श्लेषम परिहरैं ।।3।।

सम्यक प्रकार निरोध मन-वच-काय आतम ध्यावते।
तिन सुथिर मुद्रा देख मृगगण, उपल ज खुजावते।
रस रूप गंध तथा फरस अरु, शब्द शुभ असुहावने।
तिनमें न राग विरोध, पंचेन्द्रिय जयन पद पावने ।।4।।

समता सम्हारैं थुति उचारैं, वंदना जिनदेव को।
नित करैं श्रुति-रति करैं प्रतिक्रम, तजैं तन अहमेव को।
जिनके न न्हौंन न दंतधोवन लेश अंबर आवरन।
भू माहिं पिछली रयनि में, कछु शयन एकाशन करन ।।5।।

इक बार दिन में लैं अहार, खड़े अलप निज-पान में।
कचलोंच करत न डरत परिषह, सों लगे निज-ध्यान में।
अरि-मित्र महल-मसान, कंचन-कांच निंदन-थुतिकरन।
अर्घावतारन असि-प्रहारन में, सदा समदा धरन ।।6।।

तप तपैं द्वादश, धरैं वृष दश, रतनत्रय सेवैं सदा।
मुनि साथ में वा एक विचरैं, चहैं नहिं भव-सुख कदा।
यों है सकल संयमचरित, सुनिए स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि मिटे पर की प्रवृत्ति सब ।।7।।

जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अंतर भेदिया।
वरणादि अरु रागादि तैं, निज भाव को न्यारा किया।
निज माहिं निज के हेतु, निज कर आपको आपै गह्यो।
गुण-गुणी ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय, मंझार कछु भेद न रह्यो ।।8।।

जहं ध्यान-ध्याता-ध्येय को, न विकल्प वच-भेद न जहां।
चिद्भाव कर्म चिदेश कर्ता, चेतना किरिया तहां।
तीनों अभिन्न अखिन्न सुध, उपयोग की निश्चल दशा।
प्रगटी जहां दृग-ज्ञान-व्रत, ये तीन-धा एकै लसा ।।9।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

परमाण-नय-निक्षेप को, न उद्योत अनुभव में दिखे।
दृग-ज्ञान-सुख-बलमय सदा, नहिं आन भाव जु मो विखै।
मैं साध्य-साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनि तैं।
चित्पिण्ड-चंड अखण्ड सुगुण-करण्ड च्युत पुनि कलनि तैं ।।10।।

यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनन्द लह्यौ।
सो इन्द्र नाग नरेंद्र वा, अहमिन्द्र के नाहीं कह्यौ।
तब ही शुकल ध्यानाग्नि करि, चउ घाति विधि कानन दह्यौ।
सब लख्यौ केवलज्ञान करि, भवि लोक कों शिवमग कह्यौ ।।11।।

पुनि घाति शेष अघाति विधि, छिन माहिं अष्टम भू बसै।
वसु कर्म विनसैं सुगुण वसु, सम्यक्त्व आदिक सब लसै।
संसार खार अपार, पारावार तरि तीरहिं गए।
अविकार अचल अरूप शुचि. चिद्रूप अविनाशी भये ।।12।।

निज माहिं लोक अलोक, गुण-परजाय प्रतिबिम्बित थये।
रहि हैं अनन्तानन्त काल, यथा तथा शिव परिणये।
धनि धन्य हैं जे जीव नरभव, पाय यह कारज किया।
तिन ही अनादि भ्रम पंच प्रकार, तजि वर सुख लिया ।।13।।

मुख्योपचार दु भेद यों, बड़भागी रत्नत्रय धरैं।
अरु धरेंगे ते शिव लहैं, तिन सुयश-जल जग-मल हरैं।
इमि जानि आलस हानि, साहस ठानि यह सिख आदरौ।
जबलौं न रोग जहा गहै, तबलौं झटिति निज हित करौ ।।14।।

यह राग-आग दहै सदा, तातैं समामृत सेइए।
चिर भजे विषय-कषाय अब तो, त्याग निज-पद बेइए।
कहा रच्यौ पर-पद में न तेरो, पद यहै क्यों दुख सहै।
अब दौलए होउ सुखी स्व-पद रचि दाव मत चूको यहै ।।15।।

अन्तिम प्रशस्ति

(दोहा)

इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुक्ल वैशाख।
कर्‌यो तत्व उपदेश यह, लखि बुधजन की भाख ।।1।।

लघु-धी तथा प्रमाद तैं, शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढ़ो सदा, जो पावो भव-कूल ।।2।।

Copy and All rights reserved by www.vishuddhasagar.com
For more info please contact : akshayakumar_jain@yahoo.com or pkjainwater@yahoo.com
91-9892279205 ; 91-9324358035

www.vishuddhasagar.com

Filename: chhehdhala
Directory: C:\Documents and Settings\Administrator\Desktop\ACH SHRI\CHHEHDHALA
Template: C:\Documents and Settings\Administrator\Application Data\Microsoft\Templates\Normal.dot
Title: Chhehdhala
Subject: JAINISM
Author: Pandit Daulatram
Keywords: Collection of P. K. JAIN
Comments:
Creation Date: 3/31/2001 5:16:00 PM
Change Number: 23
Last Saved On: 10/24/2010 1:37:00 PM
Last Saved By: P K Jain
Total Editing Time: 1,002 Minutes
Last Printed On: 10/24/2010 1:39:00 PM
As of Last Complete Printing
Number of Pages: 11
Number of Words: 2,053 (approx.)
Number of Characters: 11,704 (approx.)